बहुत से लोग पूछते हैं 'कौन सा बेहतर धर्म है? हिंदू या इस्लाम? '

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp+ 91 9423209132

यहा ये जानना आवश्यक है कि ईश्वरीय शक्ति आपको नियंत्रित करती है और वह ईश्वरीय शक्ती सार्वभौम है। वह ईश्वर परम स्वतंत्र है। वह आपकी सोच के अनुसार नही चलता बल्कि उसके कानून के अनुसार हमे चलना होता है। आपकी सोच आपके ऊपर निर्भर है। आपका धर्म क्या कहता है, आपके धर्म पर निर्भर है।

ईश्वरीय कानून कोई मनुष्य, समुदाय या धर्म से निर्धारित परिभाषा से मान्य होने की अपेक्षा नही रखता। कोई भी अपने नियमों में ईश्वर को नही बांध सकता । हमे ईश्वर के नियम समझने पडेंगे। यदि कोई धर्म ईश्वरीय कानून के विपरित शिक्षा देता है तो उसके अनुयायीयों का धर्म में विश्वास काम नही देगा। बल्कि ईश्वरीय कानून के अनुसार सजा भुगतानी पडेगी।

ईसलिए 'वही धर्म बेहतर है जो सार्वभौमिक ईश्वरीय कानूनों को अधिक सही ढंग से परिभाषित करता है।'
इस प्रकार यदि दो धर्म विरोधी मत प्रस्तुत करते हैं, तो आपको चुनाव करना होगा।

उदाहरण के लिए कहें कि एकमात्र धर्म जो पुनर्जन्म का दावा करता है वह हिंदू है। इस्लाम का दावा है कि कोई पुनर्जन्म नहीं होता। क्या सही है? दोनों सही नहीं हो सकते। और यदि कोई सही है तो दूसरों के अनुयायियों को गलत दर्शन से प्रभावित होने का एक बड़ा खतरा है, जो उस धर्म के धर्मग्रंथों के दावों के बावजूद गलत धर्म के अनुयायियों को असंख्य दुख पहुंचाएगा। वे दावे

ईश्वरीय दायरे से समर्थित नहीं हैं और इसलिए वे दावे कोई मायना नही रखते।

आपको चुनाव करना होगा, विश्वास में बदलाव कभी भी किसी पेनल्टी से युक्त नहीं होगा बशर्ते कि बदलाव गलत से सही दिशा में होऔर न कि उल्टी दिशा में हो। एक बुनियादी समझ यह है कि आप अपने झुग्गी को एक आधुनिक फ्लैट के बदले छोड़ देंगे। आप यह तर्क नहीं देंगे कि 'मैं झुग्गी में पैदा हुआ था, इसलिए मैं अपना पूरा जीवन झुग्गी में गुजारुंगा'।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132